बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरूष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सॉझी शक्ति द्वारा हिलाएं न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में ऊँची उड़ान असम्भव है।"

वर्ष –1 अंक 4 जून 2007 मूल्यः 5 रू.

विष्व पर्यावरण दिवस विषेषांक

पर्यावरण का मतलब

पर्यावरण का मतलब वह सब, जो हमारे आसपास है जैसे पेड़–पौधे, हवा, धूप, पानी, जंगल, जमीन, पशु–पक्षी, जीव–जन्तु, नदी–नाले, पहाड़, आसमान सभी को मिलाकर पर्यावरण कहते हैं। यह सभी हमें जीवन देते है। इन्होंने तो हमें जीवन दिया लेकिन हम इन्हें धीरे–धीरे जहरीली खादें व कीटनाशक का उपयोग, जहरीले धुएं कानफोडू संगीत से प्रदूषित करते जा रहे हैं। सभी हमारे जीने के साधन हैं। हम हवा से सांस लेते हैं, पानी पीते हैं। पानी से बिजली बनती है, जमीन के अंदर से मिट्टी, चूना, पत्थर, सोना, चॉदी, लोहा, तॉबा, हीरे भी निकालते है। पर्यावरण से हमने सब कुछ लिया ही है, दिया कुछ नहीं। लेकिन ऐसा कब तक चलेगा? इंसान इतना लालची हो गया है कि पर्यावरण को पूरा बिगाड़ कर रख दिया हैं। इसी कारण बीमारियां इतनी बढ़ गई है। हमने पर्यावरण की हालत खराब करके अपने आपको इन्सानियत से गिरा लिया हैं। यदि हमें अच्छा इंसान बनना है, अच्छा जीवन चाहिए तो कुछ करना पड़ेगा। इसके लिए हम सभी के लिए कुछ करने का वक्त आ गया है। आप और हम मिलकर पर्यावरण को सुधार सकते है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियो को स्वस्थ जीवन मिल सकें। इस अंक में विशेष तौर पर पर्यावरण का बचाव व विकास हेतु बरली संस्थान के कुछ प्रयास आपको बताना चाहते हैं।

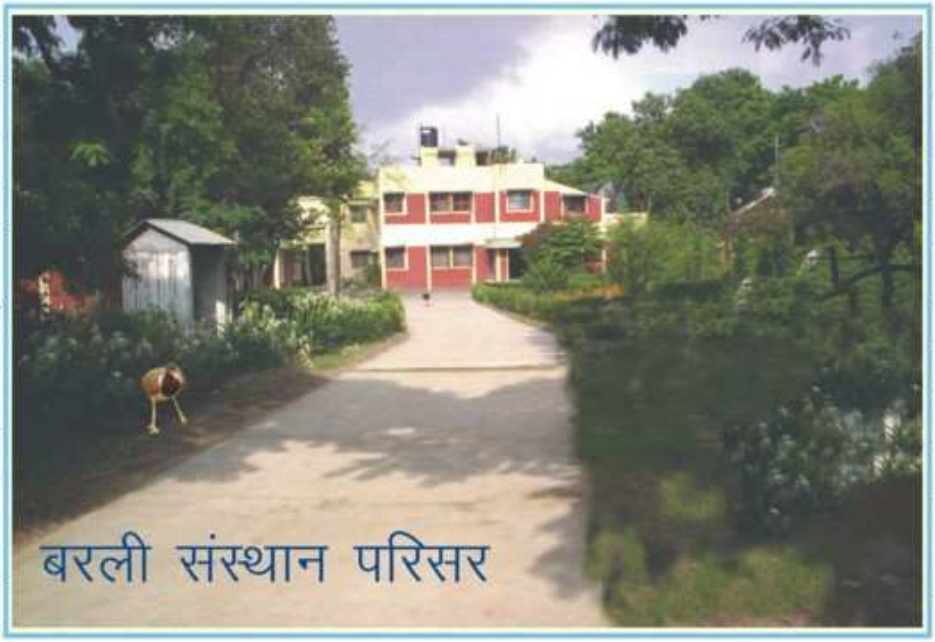

बरली संस्थान परिसर

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की स्थापना 1 जून 1985 में हुई। यह संस्थान इस युग के ईश्वरीय अवतार बहाउल्लाह द्वारा दिए गए दर्शन से प्रेरित है। दुनिया के विकास के बारे में उन्होंने लिखा है कि "दुनिया के विकास के दो पहलू है भौतिक और आध्यात्मिक यह दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं।" पशु, वनस्पति और खनिज जगत सभी जब अपनी–अपनी जगह पर बराबर स्वस्थ रहेंगे तो ही सही विकास होगा। पशु, वनस्पति और खनिज जगत इंसान

को सेवा देते हैं। इंसान को ईश्वर ने श्रेष्ठ बनने की क्षमता दी है लेकिन जब हम आध्यात्मिक गुणों को अपनाकर श्रेष्ठ काम करेंगे श्रेष्ठ तभी बनेंगे। पर्यावरण को बचाना हम सभी की आध्यात्मिक जिम्मेदारी है। इसी जिम्मेदारी को निभाने के लिए बरली संस्थान पर्यावरण प्रेमी है। यह संस्थान 6 एकड़ जमीन पर बसा है, लगभग 2 एकड़ में ऑफिस, पुस्तकालय, प्रशिक्षण केन्द्र, छात्रावास तथा अन्य आवासीय भवन हैं और 4 एकड़ में खेती होती है व पेड़–पौधे रोपे गए हैं।

संस्थान में चारों तरफ हरियाली, ठंडी हवा व छायादार पेड़, नाचते हुए मोर, कोयल की कूक, पेड़ों पर तोते, चहचहाती बुलबुल, गुनगुनाते भंवरे, रंग बिरंगी तितलियाँ आकर्षित करती हैं। यहां उगाया अनाज, दालें व सब्जियां, फल, मसाले आदि साल भर प्रशिक्षणार्थियों के खाने के उपयोग में लाया जाता है।

संस्थान ग्रामीण तथा आदिवासी महिलाओं को प्रशिक्षण द्वारा सशक्त करने में प्रयासरत है ताकि वे गांव में जाकर अपने गांव का विकास करने में मदद कर सकें। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए ग्रामीण तथा आदिवासी महिलाओं की योग्यता, क्षमता और कौशल को बढ़ाकर सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की कोशिश में है। इस प्रशिक्षण में स्वास्थ्य, कटाई–सिलाई, टाइपिंग, कम्प्यूटर, बाटिक व ब्लॉक की छपाई के साथ–साथ मानवीय मूल्य और पर्यावरण बहुत ही महत्वपूर्ण अंग हैं।

बागवानी प्रशिक्षण

सुबह दो घंटे प्रशिक्षणार्थियों को बागवानी–पर्यावरण का प्रशिक्षण दिया जाता है। ये प्रशिक्षणार्थी ज्यादातर खेती करने वाले परिवारों से आती हैं। जो यहां से जाने के बाद भी खेती का काम करती हैं। इसलिए प्रशिक्षण में खेती करना आवश्यक है। खेती करने के नए–नए तरीके बहुत आसानी से सिखाए जाते हैं। जैसे कम पानी से खेती करने के तरीके, सब्जियां अनाज, फल और जड़ी–बूटियाँ उगाना, नर्सरी बनाना, पेड़ लगाना। हल्दी, मिर्ची, लहसुन, प्याज, राई, मैथी दाना आदि का भंडारण करना सीखती हैं।

संस्थान में बागवानी प्रशिक्षण लेती प्रषिक्षणार्थी

जैविक खेती प्रशिक्षण

पर्यावरण संरक्षण में जैविक खेती का प्रशिक्षण दिया जाता हैं। केंचुओं से खाद बनाना, फल एवं सब्जियों के छिलके और जैविक कचरे से खाद बनाना, कचरे का सही उपयोग, पानी का पुनः एवं सही उपयोग कर पानी बचाना। प्रशिक्षण के बाद अपने खेतों में इन तरीकों को उपयोग करती हैं।

राखी पर पेड़ लगाए जाते हैं

राखी के अवसर पर बरली संस्थान में पौधे लगाए जाते हैं। संस्थान की निदेशिका श्रीमती जनक मगिलिगन का मायका चण्डीगढ़ में है इस कारण वे अपने भाइयों को राखी डाक से भेजती हैं। उनका मानना है कि जब रक्षा की जरूरत होती है तब भाई पास नहीं होते और समय पर रक्षा नहीं कर पाते। संस्थान इस त्यौहार को पूरी पवित्रता के साथ लगभग 23 सालों से इसी तरीके से मना रहा है। जो भाई उन्हें अपनी दीदी मानते हैं उन भाइयों से वह साड़ी का नहीं, पेड़ का उपहार स्वीकार करती हैं। अभी तक उन भाइयों एवं अन्य लोगों के सहयोग से 900 से भी ज्यादा पौधे लगाए गए जो बड़े हो रहे हैं। इसमें फलों के पेड़ जैसे आम, जामुन, जाम, षहतूत, सीताफल, अनार, पपीता, केला, इमली, विलायती इमली, बेर, कबीट, खजूर, चीकू, खिरनी, करोंदा, बादाम, नीबू, आंवला आदि। सब्जियों में सुरजना, बैंगन, आलू, गोभी, पत्तागोभी, भिण्डी, कद्दू, लौकी, करेला, गिलकी, चवलाई, बालौर, मूली, षलजम, चुकन्दर, षकरकंद, पालक, मैथी, चौलाई, बथुआ, सरसों आदि। मसालों में हल्दी, प्याज, लहसुन, सरसों, अदरक, धनिया, लेमनग्रास आदि। दालों में अरहर, बटला, चना, मसूर, मूंग, चवला, राजमा, रामबटली, मोठ आदि। बड़े पेड़ों में नीम, चंदन, मेंहदी, गोयदी, गुलमोहर, अशोक, बबूल, रिजड़ा, बांस, ताड़, शीशम, पीपल, धावड़ा, अरन्डी, कदम, नीलगिरी, गूलर, गरमला, बेहड़ा, बरगद हैं। औषधीय पेड़–पौधे हैं जिनसे घरेलू इलाज भी

करना सीखते हैं जैसे–गूलर, करंज, तुलसी, पुदीना, विलायती भांगरा, भुईतिनछीलिया, मीठी नीम, जलजमनी, धतूरा, पुवाड़िया, चूहा कानी/मूशकरणी, आकड़ा, केला, ताड़, कनेर, मेंहदी, अमलतास आदि।

पर्यावरण प्रशिक्षण कार्यशाला

संस्थान में विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को हर साल तीन दिवसीय पर्यावरण प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की जाती है। इसमें पर्यावरण से जुड़ी चर्चा व चिन्तन करते हैं। इस दिन संयुक्त राष्ट्र का संदेश पढ़ा जाता है। दुनिया की पर्यावरण समस्याओं पर चर्चा की जाती है और इन समस्याओं से निपटने के लिए हम अपने गांव में क्या कर सकते हैं इस पर भी चर्चा की जाती है। सभी अपनी–अपनी योजना बनाते हैं। पानी को बचाना, हवा, पानी, और जमीन प्रदूषण से बचाव, सोलर ऊर्जा यानी धूप की गर्मी का उपयोग, पौधों को लगाना और उनको बढ़ाना, स्वयं की और गांव की सफाई, गंदे पानी से होने वाली बीमारियां, खत्म होने वाले जंगल और इंसान की समस्याएं आदि विषयों पर चर्चाएं की जाती हैं। पर्यावरण में अनुभवी लोगों, जानकारों व विषय विशेषज्ञ आकर चर्चा करते हैं।

महिलाओं को शौचालय बनाने का प्रशिक्षण

इसी साल 23 महिलाओं को राजमिस्त्री का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को शौचालय बनाना सिखाया गया। इसमें गड्ढे खोदना, गड्ढे के अंदर दीवार बनाना, शौचालय की सीट लगाना, दीवार बनाकर आड़ करने तक का प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षणार्थी गांव में जाकर शौचालय बना रही हैं, जिससे गंदगी कम होंगी जिससे बीमारियां भी कम होंगी और पर्यावरण प्रदूषण को कम कर पाएंगें।

पानी की बचत व पुनः उपयोग

संस्थान में पानी के दो साधन हैं। एक सरकारी नल से और दूसरा बोरिंग के द्वारा। पानी को पाईप के द्वारा टंकी में भर लेते है और उसके बाद सभी को पानी मिलता है। संस्थान में लगभग 100 लोग रहते हैं। पानी का उपयोग के साथ–साथ एक–एक बूंद पानी बचाने का तरीका भी प्रशिक्षणार्थियों को सिखाया जाता है। संस्थान में जैसे रसोई घर, शौचालय, बर्तन साफ करने और खाना पकाने के बाद पानी को यूं ही नहीं बहने दिया जाता है। पानी का एक बार उपयोग होने के बाद उसे टंकी में जमा किया जाता है। इस पानी को पाईपों और फव्वारों से खेती और बगीचे में उपयोग किया जाता है। इस तरह 60 प्रतिशत पानी को फिर से काम में लिया जाता है। बरसात के पानी को बेकार नही बहाया जाता है। परिसर के पानी को कुएं के पास एक गड्ढा कर उसमें रेत, गिट्टी, पत्थर भरकर पानी को इकट्ठा करके, साफ कर कुएं में वापिस डाला जाता है जिससे पानी का स्तर थोड़ा ऊपर आ जाता है। बाद में पानी को जरूरत के अनुसार खेतों में उपयोग करते है।

कचरे का सही उपयोग

पर्यावरण को साफ–सुथरा, शुद्ध और सुंदर बनाए रखने पर खास ध्यान दिया जाता है। पर्यावरण के बचाव के लिए यह कोशिश की जाती है कि कोई भी चीज बर्बाद न हो। संस्थान में किसी भी चीज को कचरा या बेकार समझकर नही फेंका जाता। छोटी–छोटी चीज से लेकर बड़े से बड़े कचरा कहे जाने वाले चीज का उपयोग इस तरह से करते हैं कि वह कचरा न रहकर उपयोग की वस्तु बन जाती है। जैसे :–

- कटाई–सिलाई में कपड़ा सिलते समय कपड़े की बहुत सारी कतरनें बच जाती हैं उनका उपयोग सुंदर कलात्मक चिड़ियों के झूमर बनाने में किया जाता है।

- रसोई घर में चावल, आटा प्लास्टिक की बोरियों में आता हैं उन खाली बोरियों पर ऊन से कढ़ाई कर सजा लेते हैं और उसका बेग बनाते है। इसी तरह इन बोरियों के फट्टे भी सिलते है जिसे दरी की जगह काम में लिए जाते है।

- फल व सब्जियों को काटने के बाद बचे हुए कचरे, जूठन या बासी खाने से खाद बनाई जाती है।
- हम सब जानते हैं कि पन्नियां कभी सड़ती नहीं हैं, यह पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुंचाती है। इसलिए संस्थान में जो भी सामान पन्नियों में आता है, उस सामान को निकालकर पन्नियां इकट्ठी कर ली जाती हैं। हर महीने कचरा बीनने वाली महिला आती है, वह

पन्नियां ले जाती है और बदले में कंडे की राख दे जाती है जिससे स्टील के बर्तन मांजे जाते हैं और शौचालय साफ किया जाता है।

- कंघी करने के बाद जो बाल टूट या झड़ जाते हैं उन बालों को फेंका नहीं जाता हैं। उन्हें एक प्लास्टिक की थैली में जमा करते हैं। उन्हीं बालों से बाटिक छपाई में कपड़े पर मोम लगाने वाले ब्रश बनाते हैं। ब्रश बनाने के दो फायदे हैं – बाजार में एक ब्रश 50 रूपये का आता है। ब्रश बनाकर हम पैसे की बचत तो करते हैं, साथ ही पर्यावरण को गंदा करने से बचाते हैं। बाल इधर–उधर पड़े रहने से गंदगी होती है और खाने में पड़ जाते हैं। किचन, बाथरूम या शौचालय के पाईप में बाल चले जाने से पाइप लाइन बंद हो जाती है।

- संस्थान में एक नया काम शुरू हुआ है रद्दी पेपर व सूखे पत्ते से कंडे बनाना। इसमें रद्दी पेपर और खेत का बारीक कचरा इकट्ठा कर पानी में गलाया जाता है और उससे कंडे बनाए जाते हैं। बरसात में जब धूप नहीं होती तब इन कंडो का चूल्हा जलाकर खाना बनाया जाता है। इन कंडों से धुआं नहीं के बराबर होता है इससे पर्यावरण को नुकसान नहीं होता है।

सोलर कुकर उपयोग करने का प्रशिक्षण

संस्थान में सभी प्रशिक्षणार्थी सोलर कुकर से खाना बनाने का प्रशिक्षण लेते हैं। क्योंकि संस्थान में तीन बड़े व तीन छोटे सोलर कुकर लगाए गए हैं। एस. के 14 सोलर कुकर छोटे होते हैं इन्हें पेराबोलिक सोलर कुकर भी कहा जाता है। इस कुकर पर एक परिवार का खाना आसानी से बनाया जा सकता है। इस कुकर की कीमत 6500 रूपये है। संस्थान में प्रशिक्षण लेने आई प्रशिक्षणार्थी इस कुकर की पूरी कीमत नहीं दे पाती हैं। इसके लिए संस्थान उन्हें कुकर की कीमत में विषेष छूट देता है। कुकर देने से पहले संस्थान में 10 दिन का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण में कुकर को असेम्बल करना, कुकर का उपयोग, रखरखाव व तरह–तरह के खाना बनाने के तरीके सिखाए जाते है।

सोलर किचन

बरली संस्थान ने 1998 में मध्यप्रदेश में पहला सोलर किचन बनाया क्योंकि मध्यप्रदेश में साल में 300 दिन याने 10 महीने धूप रहती है। सोलर कुकर से हर रोज 100 लोगों का खाना बनता है। रोज एक सिलेंडर गैस बचाते है। एक महीने में 90 किलो गैस और 900 किलो लकड़ी की बचत होती है।

सोलर किचन में एक स्टोरेज कुकर भी लगाया गया है। यह कुकर दिन भर की गरमी को इकट्ठा कर लेता है। रात को इस पर 12 किलो आटे की रोटी बनाई जाती हैं।

सोलर ऊर्जा के कई अन्य उपयोग

- रंगाई–छपाई प्रशिक्षण के लिए चार छोटे सोलर कुकरों का उपयोग किया जाता है। बाटिक का काम यानी कपड़े की रंगाई–छपाई करना। इस काम के लिए मोम गरम करना, कपड़ा प्रेस करना, कपड़े को रंगना, पानी गरम करना आदि सोलर कुकर पर किए जाते हैं।
- कटाई–सिलाई के प्रशिक्षण में सोलर कुकर का उपयोग करते है। कपड़ों की सिलाई करते समय कपड़े में सल होते है तो कपड़ा छोटा–बड़ा व आड़ा–टेढ़ा भी कट सकता है। इसलिए कपड़ा काटने से पहले उस पर प्रेस करना जरूरी है। कुछ कपड़े जैसे शर्ट, ब्लाऊज और फ्रॉक, झबला आदि सिलते समय हर भाग को सिलने के बाद प्रेस करना जरूरी है ताकि उसमें अच्छी फिनिशिंग आए। सभी प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण के दौरान प्रेस का

उपयोग करना सीखती हैं। प्रेस गरम करने के लिए सोलर कुकर का उपयोग किया जाता है। सोलर कुकर

सोलर कुकर पर लोहे की प्रेस गर्म करके कपड़ों पर प्रेस करती प्रशिक्षणार्थी

पर लोहे की प्रेस रख दी जाती हैं जब वह गरम हो जाती हैं तो उससे कपड़े प्रेस करते है।

- सोलर हीटर यानी पानी गरम करने वाला हीटर जिससे सभी प्रशिक्षणार्थियों व स्टाफ को नहाने के लिए पानी मिलता है। पानी गरम करने के लिए न बिजली की न बिल भरने की चिंता और न कोई खर्च होता है।

- सोलर ड्रायर में खेत से निकली हरी सब्जियां, फल, मसाले, जड़ी–बूटियां आदि सुखाए जाते हैं। इन सब्जियों और फलों को सूखने के बाद पैक करके रखा जाता है। जब खेतों में सब्जियां नहीं होती हैं तब इन सूखी सब्जियों का उपयोग किया जाता है। इस सोलर ड्रायर को कही पर भी उठाकर ले जा सकते है।

संस्थान ने मध्यप्रदेश में 5 बड़े सोलर किचन बनाएं

- बरली संस्थान के अपने सोलर किचन के अलावा 4 और सोलर किचन बनाए हैं।

झाबुआ जिले के गडवाड़ा गांव में चेतना हाईस्कूल के छात्रावास में पांच सामुदायिक सोलर डिश बनाकर लगाए गए है। यह सोलर कुकर मध्यप्रदेश के सबसे बड़े कुकर हैं जिसमें हर रोज 900 बच्चों का खाना बनाया जाता है।

- धार जिले के धानी गांव में एक आवासीय विद्यालय में संस्थान द्वारा बनाया सोलर किचन लगाया गया जहां

धानी गांव में सोलर कुकर पर खाना बनाने से ढेर सारी लकड़ी की बचत होती है।

आदिवासी समुदाय की 200 लड़कियों के लिए हर रोज खाना बनता है।

- धार जिले में ही दत्तीगांव के छात्रावास में भी एक सामुदायिक सोलर किचन बनाया है। जिसकी मदद से

बच्चे सोलर तकनीक के बारे में सीखते है। वहां पर 450 विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं का खाना बनाया जाता है, जिससे गैस और लकड़ी दोनों की बचत होती है।

- इंदौर के श्रद्धानंद आश्रम में भी एक बड़ा सोलर किचन लगाया है। इस आश्रम में लगभग 60 अनाथ बच्चों के लिए खाना बनाया जाता है।

गांव के लोहारों और सुतारों को सोलर डिश बनाने का प्रशिक्षण दिया

जर्मन की श्रीमती हाइके व कु. मार्था तथा संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन के मार्गदर्शन में गांव के लोहारों, सुतारों को 10 मीटर का सोलर डिश बनाना सिखाया। झाबुआ जिले से श्री राजेन्द्र चौहान, श्रीमती नन्दा चौहान, मेघनगर से श्री संजय पांचाल, धार जिले से श्री सखाराम डावर, ग्वालियर जिले के सुसेरा गांव स्थित रब्बानी स्कूल से श्री हेतराम, श्री छोटे खान, श्री शहजाद को कुकर बनाने का

प्रशिक्षण दिया। गांव के लोग सोलर कुकर बनाएगें तो कुकर की कीमत कम होगी और लोग कुकर खरीद पाएंगे। कुकर बिगड़ जाए तो वहीं सुधार लेगें। एक माह के प्रशिक्षण में सभी ने मिलकर कुकर बनाया। इसकी विशेषता है कि इस एक कुकर पर 100 लोगों का खाना बना सकते है। कुकर को बनाने में विदेशी सामान की कोई जरूरत नहीं है।

बाहर से आने वाले सरकारी/गैरसरकारी संस्थाओं के लिए शिक्षण व प्रशिक्षण केन्द्र

सोलर ऊर्जा की जानकारी लेने के लिए एवं षोध करने के लिए संस्थाओं, स्कूलों, कॉलेजों से लगातार लोग आते हैं। जैसे मध्यप्रदेश के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय की ऊर्जा एवं पर्यावरण अध्ययन शाला, आई. आई. टी. दिल्ली, आई. आई.एम. इंदौर, कस्तूरबा ट्रस्ट, बाल निकेतन, विश्वबन्धुत्व आन्दोलन संस्था, निपसिड, समाज कार्य महाविद्यालय इंदौर, डेली कॉलेज इंदौर, एम. वाय. अस्पताल, चोइथराम अस्पताल, ऋषिराज इंस्टीट्यूट टेक्नोलॉजी कॉलेज, विक्रम कानवेन्ट व देवास, उज्जैन, मन्दसौर, नीमच, रतलाम, छतरपुर, बैतूल व भोपाल से व्यक्ति आते रहते हैं और राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़ और दिल्ली से तथा देश–विदेशों से संस्थान में साल भर हजारों लोग आते रहते हैं।

संस्थान का गांवों में पर्यावरण पर प्रभाव

प्रशिक्षण के बाद प्रशिक्षणार्थी अपने साथ सोलर कुकर ले जाते हैं। सबसे पहले 2002 में टेमला गांव के पांच परिवार पर्यावरण दिवस पर कुकरों को अपने घर ले गए। वे घर में कुकर का उपयोग खाना पकाने, पानी गरम करने में करते हैं। इन्हें देखकर गांव के लोग भी सोलर कुकर के बारे में जानते हैं। वे अपनी बेटियों को संस्थान में प्रशिक्षण लेने के लिए भेजते हैं। संस्थान से प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थियों में से अभी तक 300 प्रशिक्षणार्थी अपने घर सोलर कुकर ले गए और अपने घर में खाना बनाने के लिए उपयोग कर रहे हैं।

सोलर कुकर से आमदनी, नत्थूढाना

बैतूल जिले के गांव नत्थूढाना की स्वयं सहायता समूह की 20 महिलाओं ने 2005 में संस्थान से सोलर कुकर का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के बाद सोलर कुकर पर मिठाई,

ग्राम नत्थूढाना में प्रशिक्षण के बाद सोलर कुकर पर मिठाई, नमकीन बनाकर बेचती महिलाएं

नमकीन खुरमे, सेव, चिउड़ा बनाकर बेचने का काम शुरू किया। ग्राम नत्थूढाना के स्कूल में होने वाली पालक–शिक्षक संघ की मासिक बैठकों में यहीं से नाश्ता खरीदा जा रहा है। आसपास के दूसरे गांवों के स्कूलों में भी होने वाली मासिक बैठकों में नाश्ते के लिए सामान खरीदने के लिए सम्पर्क बनाया जा रहा है। सोलर कुकर से बना सामान सावलमेण्ढा, बहिरम हाट/बाजार में भी बिकता है।

झाबुआ जिले में नारू उन्मूलन

झाबुआ जिले के 302 गांवों में गंदे पानी से होने वाले नारू रोग से पीड़ित रोगियों का इलाज के लिए सरकार द्वारा चलाए गए "नारू उन्मूलन" कार्यक्रम में महिलाओं को प्रशिक्षित किया। 1992 में रिओ डि जिनेरिओ, ब्राजील के भू सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण विभाग से ''ग्लोबल– 500'' सम्मान से संस्थान को सम्मानित किया। इसके बाद संस्थान ने पर्यावरण पर काम जारी रखा जो इस प्रकार है:–

पर्यावरण जागरूकता व कुछ वास्तविक काम

संस्थान से प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थी सन् 1992 के बाद से हर साल अपने गांव में पर्यावरण दिवस मनाते हैं। पर्यावरण दिवस पर जानकारी जैसे हवा, पानी, जमीनी प्रदूषण से बचाव, पानी का संरक्षण, सोलर ऊर्जा का उपयोग, पौधों को लगाना, स्वयं की, गांव की सफाई, गंदे पानी से होने वाली बीमारियां, खतम होते जंगल, इंसान की समस्याएं आदि

विषयों पर चर्चाएं की जाती हैं और गांव में रैली निकालते हैं। गांव में प्रषिक्षणार्थी पर्यावरण संरक्षण के लिए शौचालय बनाते हैं, पालाबंदी में सुरजने के पेड़ लगाना, वृक्षारोपण व वन सुरक्षा समितियों में काम कर रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र का संदेश

संयुक्त राष्ट्र ने विश्व पर्यावरण दिवस 2007 का विषय, "पिघलती बर्फ : एक गर्म विषय" था। हमारे वातावरण में कार्बन–डाइ–ऑक्साइड गैस बढ़ रही है। इससे धरती पर हवा, पानी गंदा हो रहा है। हिमालय में बर्फ लगातार पिघलती जा रही है जिससे मौसम गड़बड़ा रहा है। समुद्र के किनारों पर बसे लोगों को डूबने का खतरा पैदा हो गया है। बर्फ कम होने पर पानी की समस्या से अकाल और सूखा बढ़ जाएगा। इसका परिणाम कई प्रकार की फसलों पर होता है जिससे खाद्य असुरक्षा बढ़ती है। भोजन पकाने के लिए पेड़ों की कटाई से हमारी सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति खतरे में है। इससे बचने के लिए अनेक नीतियां और प्रौद्योगिकीय विकल्प उपलब्ध हैं। वायु प्रदूषण को घटाने और ऊर्जा का उपयोग बढ़ाने में विकसित देश विशेष प्रयास कर सकते हैं। जल और वायु के परिवर्तन से जो देश कठिनाईयां झेल रहे हैं उनमें अनुकूल उपायों को लागू करने में सभी को समर्थन देना होगा।

बरली संस्थान का संदेशः हम सभी पर्यावरण को बचाने व बदलने का संकल्प लेकर अपने–अपने क्षेत्र और आस–पास काम करेंगे तो पर्यावरण बचेगा। इसके लिए हमें बाहर के लोगों का या सरकार का रास्ता देखने की जरूरत नहीं है।

संस्थान के समाचार

पर्यावरण दिवस पर तीन दिवसीय कार्यशाला

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में पर्यावरण दिवस पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इसमें "महिलाएं और पर्यावरण" विषय के अंतर्गत

संस्थान में पर्यावरण दिवस पर तीन दिवसीय कार्यशाला

पर्यावरण संरक्षण में भागीदारी व जिम्मेदारी एवं सोलर ऊर्जा के उपयोग पर चर्चा की गई। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ सी. एस. गंधे ने पर्यावरण व स्वास्थ्य पर चर्चा की। डॉ. दीपक वर्मा, विभागाध्यक्ष, डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय समाज विज्ञान संस्थान, महू ने महिलाओं की पर्यावरण में भागीदारी के बारे में बताया। डॉ. सिहोरवाला, ने पानी की बचत के महत्व पर चर्चा की। डॉ. डी. पी. शिंदे ने तंबाकू, नशा और पर्यावरण पर चर्चा की।

कार्यशाला के समापन पर प्रषिक्षणार्थी अमृता, रितु, पामली व लुम्बाई ने सोलर ऊर्जा के उपयोग, पानी की बचत, हैण्डपम्प, कुओं का पुर्नभरण, पर्यावरण प्रदूषण पर अपने विचार प्रस्तुत किए। पर्यावरण पर भिलाली व मणिपुरी गीत सुनाए। मुख्य अतिथि श्रीमती सूरज डामोर, अतिरिक्त कमिश्नर, कमर्शियल टेक्सेस, इन्दौर ने कहा महिलाएं ही पर्यावरण को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। अध्यक्ष श्री जी. एस. डामोर, अधीक्षण यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, इंदौर ने कहा कि पर्यावरण विनाश में इंसान का हाथ है, इसके संरक्षण की जिम्मेदारी भी इंसान की है। विशेष अतिथि श्रीमती माधवी जमींदार ने जैविक खेती के बारे में बताया। निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने संस्थान का परिचय देते हुए कहा कि यह विगत 23 सालों से पर्यावरण के लिए दृढ़ संकल्पित एवं सजग है। संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन द्वारा निर्मित मशीन से धुंआरहित कंडों का उद्घाटन श्रीमती एवं श्री डामोर द्वारा किया गया। मध्यभारत में धुंआरहित कंडों का निर्माण का यह पहला प्रयोग है।

विस्तार केन्द्र बेवरती और मोहपुर में पर्यावरण दिवस मनाया गया

5 जून 2007 को विस्तार केन्द्र बेवरती और मोहपुर में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री धूलजी रावल ने कहा कि पर्यावरण का संरक्षण हमारा कर्तव्य है। श्री बृजलाल यादव ने कहा कि पर्यावरण के बारे में जागरूकता होना जरूरी है। श्री मोती राम यादव ने कहा कि हम सभी को अपने जीवन में दस पेड़ लगाने चाहिए। केन्द्र प्रभारी लता ने कहा–पर्यावरण की आज की हालत को देखते हुए हमें अपारम्परिक ऊर्जा स्त्रोतों का उपयोग करना चाहिए। प्रशिक्षण प्राप्त कर रही प्रशिक्षणार्थी जानकी, संगीता, माधुरी, क्रांति, चंद्रिका ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन कु. सत्या और आभार कु. सोनवती नेताम ने किया।

प्रोफेसरों का समूह संस्थान में

25 जून 2007 को एकेडेमिक स्टाफ कॉलेज इंदौर से 20 प्रोफेसरों का समूह संस्थान देखने आया। वे संस्थान देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा यहां पर सिर्फ अच्छी बातें ही नहीं बल्कि अच्छे कार्य देखने को भी मिले।

स्वयं सहायता समूह विशेषज्ञ श्रीमती नंदिनी आजाद

25 जून 2007 को स्वयं सहायता समूह विशेषज्ञ श्रीमती नंदिनी आजाद संस्थान देखने आई। उन्होंने कहा कि वो संस्थान सेवापूर्ण कार्यों और इस क्षेत्र में उनके सतत् प्रयासों के लिए दिल से बधाई देना चाहती हैं।

इन्दौर सीमा सुरक्षा बल के उपमहानिरीक्षक

2 जून 2007 को इन्दौर सीमा सुरक्षा बल के उपमहानिरीक्षक श्री रमेश सिंह ने संस्थान देखा, यहां काम कर रहे लोगों की सेवाभावना की दृढ़ता को देखकर प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने कहा कि यहां पर सभी लोग मानवता के विकास के लिए महान काम कर रहे हैं। उन्होंने संस्थान की प्रगति के लिए शुभकामनाएं दीं।

डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय समाज विज्ञान संस्थान, महू से एक समूह आया

4 जून 2007 को डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर राष्ट्रीय समाज विज्ञान संस्थान, महू से 24 षोधकर्ताओं का एक समूह संस्थान को देखने आया। डॉ पी. सी. बंसल ने कहा कि संस्थान ग्रामीण महिलाओं को उनके जीवन के विकास में सहायता कर रहा है। श्री शशिरंजन सिन्हा ने कहा कि यहां का शांत वातावरण प्रशिक्षणार्थियों में समाज उत्थान के लिए कुछ करने का उत्साह पैदा करता है। डॉ डी. के. वर्मा ने कहा कि बरली संस्थान में आना मेरे लिए हमेशा से ही सुखद अनुभव रहा है। डॉ. टी. ए. सिहोरवाला ने कहा कि संस्थान विशेषकर आदिवासी महिलाओं के विकास के लिए काफी प्रशंसनीय काम कर रहा है। प्रशिक्षण उनके रोजमर्रा के जीवन में बदलाव लाता है जो स्वयं उनके व परिवार के लिए भी लाभप्रद है।

संस्थान में श्रीमती दीप्ती रेड्डी

21 जून 2007 को नेटवर्क इंटरप्राइजेस फंड, चेन्नई से कु. दीप्ती रेड्डी आई। वे दो दिनों तक रही और यहां चल रहे कार्यक्रमों को देखा। उन्होंने कहा कि संस्थान महिलाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें सशक्त भी बना रहा है जिससे महिलाएं ग्रामीण इलाकों की सही मायने में 'बरली' बन सकें।

स्वयंसेविका

आयरलैंड की एमी ने संस्थान में 5 जून से 26 जून तक सेवा दी। उन्होंने लड़कियों को कम्प्यूटर और अंग्रेजी सिखाई। उन्हें यहां काम करके बहुत अच्छा लगा। बरली के शांत वातावरण ने उनका मन मोह लिया। वे लड़कियों के सीखने की लगन और उत्साह से काफी प्रभावित हुई। उन्होंने कहा

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

_____

_____

_____

_____

विषेष सूचना

प्रशिक्षण लेकर आप स्वयं के लिए, अपने परिवार और अपने गांव के लिए जो भी काम कर रहे हों, हमें जरूर लिखकर भेजें ताकि आपके समाचार "बरली की दुनिया" में छाप सकें।

संपादिका "बरली की दुनिया"
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180, भमौरी, न्यू देवास रोड़,
इंदौर–452010(म.प्र.) फोन : 0731–2554066

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाषित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन